

प्रतिमा उमराव (स०अ०)

अमौली, फतेहपुर

हमारी पहचान

हिन्दी है मन की भाषा,
हिन्दी दिल की बात।
हिन्दी से ही जुड़ते हैं,
अपने सारे जज़्बात।।

हिन्दी में माँ की ममता,
हिन्दी में मुस्कान,
हिन्दी में बसता है ,
अपना,प्यारा हिन्दुस्तान।।

सरल-सहज और मधुर है,
इसकी हर इक बोली।
शब्द-शब्द में प्रेम भरा है,
जैसे मिश्री की घोली।।

ज्ञान-विज्ञान की राहों में,
हिन्दी दीप जलाएँ।
नई सोच के पंख लगाकर,
आगे हमें बढ़ाएँ।।

हिन्दी केवल भाषा नहीं,
संस्कृति की पहचान।
इसके अक्षर-अक्षर में है,
भारत का सम्मान।।

घर-आँगन से विद्यालय तक,
हिन्दी साथ निभाती।
टूटे मन को प्रेम से जोड़कर,
रिश्तों को महकाती।।

दुनिया चाहे जितनी बदले,
हिन्दी सदा रहे महान,
समय के संग बढ़ती जाए,
रखकर अपना मान।।

आओ मिलकर मान बढ़ाएँ,
हिन्दी का हर बार।
हिन्दी से ही रोशन हो अपना,
सुन्दर भविष्य अपार।।

हिन्दी हमारी शान है,
हिन्दी हमारा मान है
हिन्दी से ही गूँजे जग में,
प्यारा हिंन्दुस्तान है।।

मेरी प्यारी पुस्तक

रंग-बिरंगी पुस्तक मेरी,
सबसे अच्छी मित्र मेरी।
अच्छी-अच्छी सीख देती,
नया ज्ञान मुझको देती।।

प्यारे-प्यारे चित्रों वाली,
बोलती हुई चित्रों वाली।
मनभावन कविता वाली,
सीख भरी कहानी वाली।।

कार्टून इसमें बड़े निराले,
कुछ लगते भोले-भाले।
कुछ मुख से मतवाले,
कुछ बड़े चिढ़ाने वाले।।

लोट-पोट कर मुझे हंसाते,
चन्दा-सूरज मुझे दिखाते।
नदी-पहाड़ मुझे दिखाते,
चिड़िया रानी से मुझे मिलाते।।